International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)

E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

छतरियों ने सहेजी है भिवानी की भव्यता:- एक झलक

स्वाति[1], निरुपमा सिंह[2]

[1]शोधार्थी , हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

[2]प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, दृश्य कला विभाग, देहरा (काँगड़ा), हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

सार:-

भिवानी का इतिहास विभिन्न राजवंशों से जुड़ा हुआ है | विभिन्न शासकों द्वारा यहाँ प्राचीन मंदिरों, किलों, मकबरों और छतरियों के रूप में अपनी यादें संजोई हैं| उस समय की कलात्मक धरोहर आज भी यहाँ जीवंत संपदन सी आभासित होती है| यहाँ वास्तुकला में मुगल-राजपूति प्रभाव स्पष्ट है| जो तत्कालीन प्रभुत्व और वर्चस्व का परिचाय है| यह स्थल अपने व्यापारिक महत्व से भी अहम रहा है| जिसके फलस्वरूप यहाँ कलात्मक अवधारणाएं भी उसी अनुरूप फलित रहीं| व्यपारियों ने अपनी शानौ-शौकत में चार चांद लगवाने के लिए छतरियों में भित्ति चित्रों का निर्माण करवाया था| परन्तु उस दौर में इनकी वास्तविकता/ भव्यता की कल्पना करना ही अपने आप में रसास्वादन का अनुभव है| भित्तिचित्रों में तत्कालीन जनसाधारण के धार्मिक, पौराणिक परिप्रेक्ष्य/ विश्वासों, मान्यताओं, रिती-रिवाजों, परंपराओं, विचारात्मक अनुभूतियों, की झांकी प्रदृशित/अंकित है|

सूचक शब्द :- छतरियां, भिवानी, भव्यता, भित्ति चित्र, हरियाणवी संस्कृति

प्रस्तावना:-

कला निरंतर प्रगतिशील एवं गतिशील रही है| कला मनुष्य के जीवन व संस्कृति का एक अभिन्न अंग है| इसके द्वारा प्राचीन संस्कृति, सभ्यता, परंपराओं आदि का बोध होता है| अपनी परम्पराओं एवं संस्कृति को नई पीढ़ी में स्थानांतरित करने का यह सबसे सरल एंव सफल माध्यम है| कला केवल सामाजिक कृत्तयों की अभिव्यक्ति नहीं है यह मानसिक बौद्धिक परिवर्तनों/ परिस्थितियों की समानुभूति का परिचाय है| पारिस्थितिक, वातावरणीय, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों के बदलाव व परिवर्तन का भी अन्वेषण है| वैसे तो पृत्येक युग की कला उस युग की आधुनिक कला ही होती है|

इसी बढते-बदलते, सामाजिक- सांस्कृतिक परिवेश में कलात्मक अवधारणाएं भी गतिशील रही हैं इसी क्रम में हम हरियाणा प्रदेश के जिला भिवानी में 19 वीं शताब्दी में बनवाई

गई छतरियों में विद्यमान जीवंत कलात्मक अभ्यासों /अभिव्यक्तियों के परारूपों की चर्चा करेंगे| कलात्मक, सर्जनात्मक यात्रा का प्रक्षेपण, विचारात्मक अभिव्यक्ति का अध्ययन करते हुए भित्ति चित्रों में विद्यमान कथानक स्वरूप को भाषित करने का प्रयास करेंगे|

तकरीबन 200 वर्ष बीत जाने के बाद भी दीवारों पर बने चित्र जीवंत हैं रंगों की भव्य चमक आज भी उसी दौर में ले जाने पर उतारू है| उन्हें देखकर लगता है मानो कलाकृतियां स्वयं अपने कथानक स्वरूप को भाषित कर रही हों, मुख्यतः तीन रंगों का प्रयोग प्रचुरता से हुआ है:- लाल (महरून), पीला (यैलो ओकर), हरा (सैप ग्रीन, टैरावृट ग्रीन)| रंग द्रव्य प्रायः प्राकृतिक रहे हैं| चित्रों में धरातल/सतह क्षेत्रीय तत्वों का समायोजन है (चूना, भट्ठे की राख) इत्यादि का प्रयोग किया गया है|

आज वैश्वीकरण के दौर में जहाँ कला ने अपनी बाहें अनंत फैलाई हैं, इसकी जडें भित्ति चित्रों के ऐतिहासिक साक्ष्यों में ही निहित हैं| भीमबेटका के गुफा चित्र मानव के दृश्य अभिव्यक्तियों के प्रति रचनात्मकता के परिपेक्ष्य के प्राथमिक उदाहरण हैं| उनकी भावात्मक, संवेगात्मक अनुभूतियों की रचनात्मक झलक यह स्पष्ट करती है कि कला जीवंत है|

मानव सभ्यता के विकास काल में कला के अनेकों परिवर्तित रूप देखने को मिलते हैं| परन्तु भित्ति चित्रों के अध्ययन से यह दृष्टव्य है कि गुफा मानव भी अपने निवास स्थान को सजाने या तत्कालीन वैचारिक, अनुभूतियों को अभिव्यक्त करता था और 19 वीं शताब्दी में बनी इन छतरियों में दृशाए गए ऐतिहासिक, पौराणिक, धार्मिक पहलुओं और तत्कालीन अवधारणाओं का अंकन भी वैचारिक दृष्टिकोण की स्पष्टता का घोतक है|

चित्रों की विषय-वस्तु :-

धार्मिक, पौराणिक विषयों का अंकन, रिति-रिवाजों, त्योहारों की झलक, महाभारत, रामायण, कृष्ण लीला, समुद्र मंथन, शिव की बारात, गोवर्धनधारी कृष्ण, महिला-पुरूष आकृतियों (राधा-कृष्ण) आलंकारिक रूप में अंतराल विभाजन में मुख्य स्थान दिया गया है| प्रतिमालक्षण/प्रतिमा विज्ञान (चिन्हात्मक अंकन), देवी भवानी, श्लोकों का उल्लेख, गेंदें के फूल, ब्रहमा, पशु-पशियों, वानर सेना, इंद्र का ऐरावत हाथी, राम विवाह, सीता स्वयंवर, धनुषधारी राम लक्ष्मण, होली के रंगों से सराबोर आकृतियों का अंकन, वामन अवतार, झूला-झूलती महिलाएं, सूर्य देव, सात अश्व, शिव नंदी आदि चित्रित हैं|

रंग योजना व शैलीगत प्रभाव:-

प्रमुख तीन रंगों- लाल, पीला, हरा का अत्यधिक प्रयोग किया गया है| हल्के रंग की पृष्ठभूमि पर रंगों की भव्यता का महाकुंभ चिरस्मरणीय है| गहरे रंग के साथ हल्के रंग की तान का प्रयोग भी किया गया है| गहरे रंग की रुप रेखा मानो आकृतियों की परिधि निश्चित कर रही है| वस्त्रों में राजस्थानी बेल-बूटों का अंकन व श्रंगारिकता का सफल प्रयोग किया गया है| आभूषणों में विविधता, (राजसी प्रभाव) परिलक्षित कर रही है| चित्रों में वास्तुकला की झलक मुगलिया व मंदिरों का अंकन अतुल्य है| श्रंगारिक व अलंकारिक तत्वों का बहुलता/प्रचूरता से प्रयोग किया गया है| आकृति रचना में विविधता कलाकारों/चित्रकारों के समायोजित अभ्यासों की ओर इशारा कर रही है| पक्षियों में मयूर का अत्यधिक चित्रण है| हाशिये गहरे लाल (महरून) व हरे रंग (सैप ग्रीन, टैरावृट ग्रीन) में बनाए गए हैं| सभी चित्रों में संयोजन प्रायः भिन्न है, गैर-परम्परागत अंतराल विभाजन है| दिवारों पर पुष्पित पौधों का अंकन व भिन्न-भिन्न प्रकार के फूलों (प्राकृतिक व शैलीगत) चित्रित हैं| पूर्व दिशा में सूर्य देव का अंकन धार्मिक महत्व की गहराइयों को लक्षित करता है|

कलात्मक विशेषताएं व सृजनात्मक पक्ष:-

कलाकृति के सृजन में निर्धारण नहीं होता या यूं कहें की कलाकृति में विषय उद्देश्य या प्रयोजन कला समीक्षक, कला प्रेमी, कला चिंतक, दार्शनिक मनोवैज्ञानिक व शोधार्थी अपने मानस पटल पर उसकी अनुभूति या खोज कर सकता है इसकी कलात्मक अवधारणाओं में स्वतंत्रता है कहने का अर्थ यह है कि यहां भित्ति चित्रों में अभिव्यक्ति के प्रथम चरण में विषय के प्रति निर्धारित योजना तो रही होगी अर्थात उसी आधार पर चित्रों में अंतराल विभाजन व कलात्मक तत्वों, चित्र कर्म के छः अंगों (षडांग) की विस्तृत व्याख्या के आधार पर, कला के सिद्धांत इत्यादि कलात्मक आधार स्तंभों पर ही इनके अभ्यासों की श्रंखलाएं सृजित हैं आकृतियों में कल्पनात्मक पक्ष भी उद्घोषक है जिस प्रकार कल्पना में मूर्तता या किसी लक्ष्य पर केंद्रित संयोजन तथा समीकरणों की प्रधानता होती है ठीक उसी प्रकार यहाँ सृजित चित्रों में धार्मिक, पौराणिक, विषयों का अंकन कल्पनात्मक दृष्टिकोण/ पक्ष का ही प्रयाय है, लयात्मक प्रभाव या गत्यात्मकता का विशेष गुण दृष्टव्य है|

तकनीकी प्रयोग :- क्षेत्रीय कलाकारों द्वारा सृजित इन भित्ति चित्रों का अंकन अतुल्य है यहाँ भित्ति चित्रों में राजस्थान की शेखावाटी शैली का काफी प्रभाव दिखाई देता है| चित्र के लिए सतह तैयार करने के लिए चूने से प्लास्टर की गई दीवार की सतह को अगेट से जलाया गया था| कलात्मक क्षेत्र में ऐसे प्रयोग न केवल उस समय ही अपितु आज के दौर तक भी कलाकारों के माध्यम की स्वतंत्रता व सफल तकनीकी प्रयोगों का परिणाम है| रंग द्रव्य को बाइंडर के साथ मिलाया गया था, वह या तो आक (सामान्य पौधे से गोंद), Egg Tempera या सरेश (ऊँट की हड्डी से बना गोंद) तत्पश्चात धरातल/सतह को चिकना करने के लिए नारियल के तेल या अलसी के तेल से पालिश किया गया| 19 वीं शताब्दी तक प्रयोग में लाए गए माध्यमों में खनिज या वनस्पति रंजक होते थे| गेरू रंग की प्रधानता रही है| आमतौर पर आंतरिक कार्य में सेको पद्धति से चित्रण कार्य हुआ है| इन उल्लेखनीय भित्ति चित्रों की चित्रण तकनीक फ्रेस्को बूनो और फ्रेस्को सेको प्रायः दोनों रूपों में देखने को मिलती है| सूखे धरातल पर रंग द्रव्यों से बने चित्रों में रंगों के हल्केपन जैसे परिणाम सामने हैं वहीं गीले धरातल पर किए गए कार्य में रंगों को द्रढता से चीर स्थाई किया है| आज भी इन छतरियों में बने चित्रों के रंगों की भव्यता देखते ही बनती है| परन्तु देख-रेख की कमी या अज्ञानता के मध्यनजर कुछ हिस्सों से रंग लुप्त होते जा रहें हैं| रंगों के हल्के होने और उतर जाने के पीछे तकनीकी व संरक्षण की कमी दोनों की अहम भूमिका है| वातावरणीय परिस्थितियों या मौसमीय बदलावों के कारण भी यह स्थिति उत्पन्न हुई है| छतरियों के अंदरूनी भाग में रंगों की चमक आज भी बरकरार है| परन्तु कुछ हिस्से जो सीधे तौर पर धूप, धूल, बारिश, से संपर्क में रहे हैं वहां पर रंगों के हल्केपन जैसे दुष्परिणाम रहे हैं|

रंगों के महाकुंभ का लक्ष्यार्थ :- जिस प्रकार शब्दों में कवि का लक्ष्यार्थ सिद्ध करने की शक्ति है ठीक उसी प्रकार रंगों में कलात्मक वैचारिक अनुभूतियों की अभिव्यंजना सिद्ध करने का सार्मथ्य है, भावात्मक प्रस्तुति का आधार स्तंभ रंग हैं| यहाँ भित्ति चित्रों में मुख्य लाल (महरून) , पीला (यैलो ओकर) , हरा (सैप ग्रीन,टैरावृट ग्रीन), काला, सफेद रंग का प्रयोग हुआ है| रंग, रेखा, आकार संयोजन में इतनी स्वछंदता है कि इसके द्वारा प्रेषक की दृष्टि को आसानी से आकर्षट किया जा सकता है| यहाँ लाल व हरे रंग की प्रधानता न केवल धार्मिक महत्व का घोतक है अपितु महिला आकृतियों के अंकन के

साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, मान्यताओं, रिति- रिवाजों का भी प्रयाय है जो महिलाओं के वैवाहिक जीवन से संबंधित भी दृष्टिगत लगता है|

लाल रंग (महरून):- यहाँ तीव्रता, आकर्षण, प्रेम, श्रृंगारिक, दैविक, उत्सवी, इत्यादि पक्षों को छुता हुआ प्रतित हो रहा है|

हरा रंग (सैप ग्रीन,टैरावृट ग्रीन):- यहाँ हरे रंग की तानों में सैप ग्रीन, टैरावृट ग्रीन का प्रयोग किया गया है, हरा रंग समृद्धि का प्रतीक रूप है, शीतल, धार्मिक, उत्सवी, विकास, विस्तार, सर्जन, विपुलता, अनंतता, प्राकृतिक महत्व लिए कथानक स्वरूप को भाषित करता प्रतित हो रहा है|

पीला रंग (यैलो ओकर) :- अनुभव, ज्ञान, और संस्कारों के कारण रंगों का सुनियोजन संभव व सिद्ध है| अर्थ संकेत व लक्ष्यार्थ भी भौगोलिक परिवेश के अनुसार नित परिवर्तित रूप में विदयमान हैं| पीला रंग मांगल्य, सर्जन, परिपक्वता, ज्ञान, समृद्धि, उल्लास का प्रतीक है|

काला व सफेद रंग का प्रयोग यहाँ चित्र को परिपूर्ण कर रहा है| गहरे काले रंग की रूपरेखा चित्र की परिधि सुनिश्चित कर रही है व सफेद रंग का सफल प्रयोग अलंकरणीय प्रयोजनों में जैसे- वस्त्रों की साज-सज्जा व आभुषणों के अंकन में प्रमुख है|

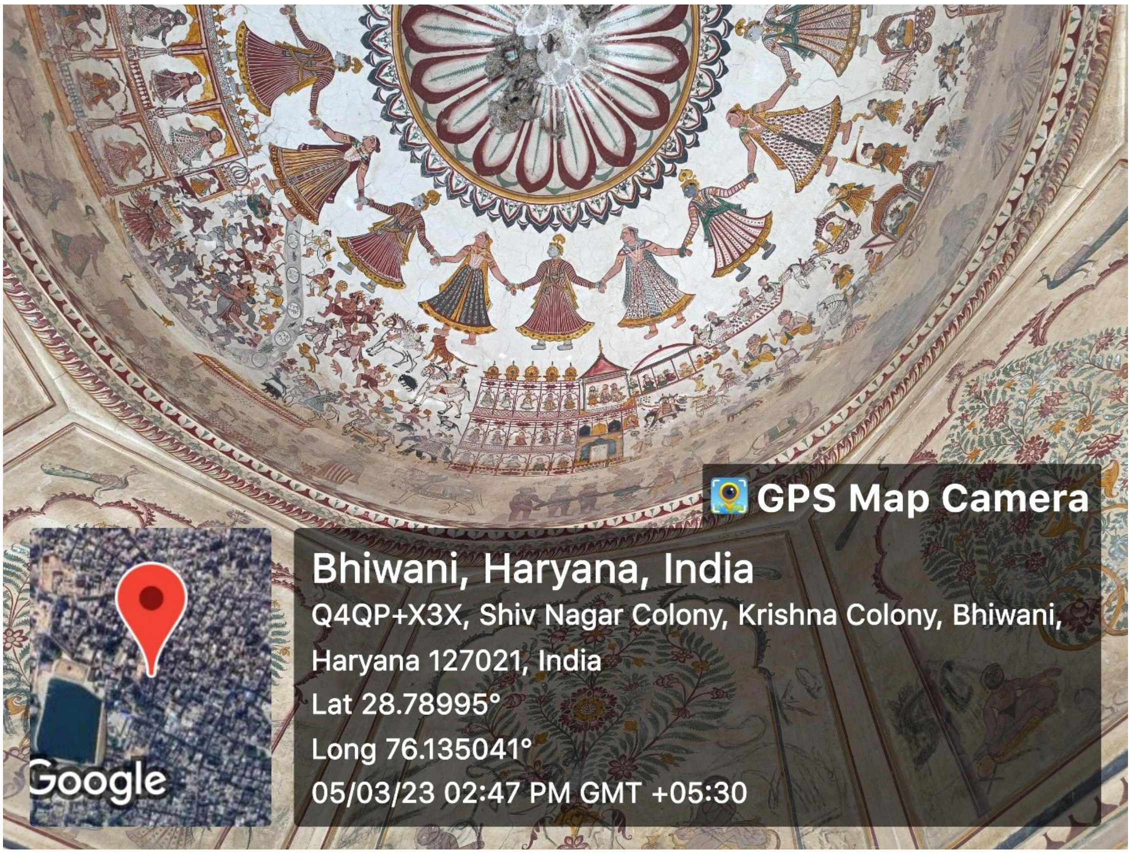

(छायाचित्र-1) रामायण, भित्ति चित्र, छतरी, भिवानी

प्रमुख भित्ति चित्रों की झलक:-

उपरोक्त छायाचित्र-1:- में दाहिने भाग में (वानर सेना व लंकापति रावण) की सेना के बीच भीषण युद्ध का दृश्य अंकित है आकृतियों में गत्यात्मकता व स्तिथि निर्धारण बखूबी युद्ध की गर्जना प्रदर्शित कर रहा है आकृतियां निम्न आकार में चित्रित है चित्र के मध्य में रामसेतु का अंकन विशिष्ट है दाहिनी और दशानन को पूर्ण आवेश में बलिष्ठ रूप में चित्रित किया गया है| राम सेतु पर (राम) अंकित किया गया है लिपि सौंदर्य का प्रयोजन अतुल्य है व चित्र में आर्कषण का प्रमुख केंद्र बिंदु है|

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)

E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

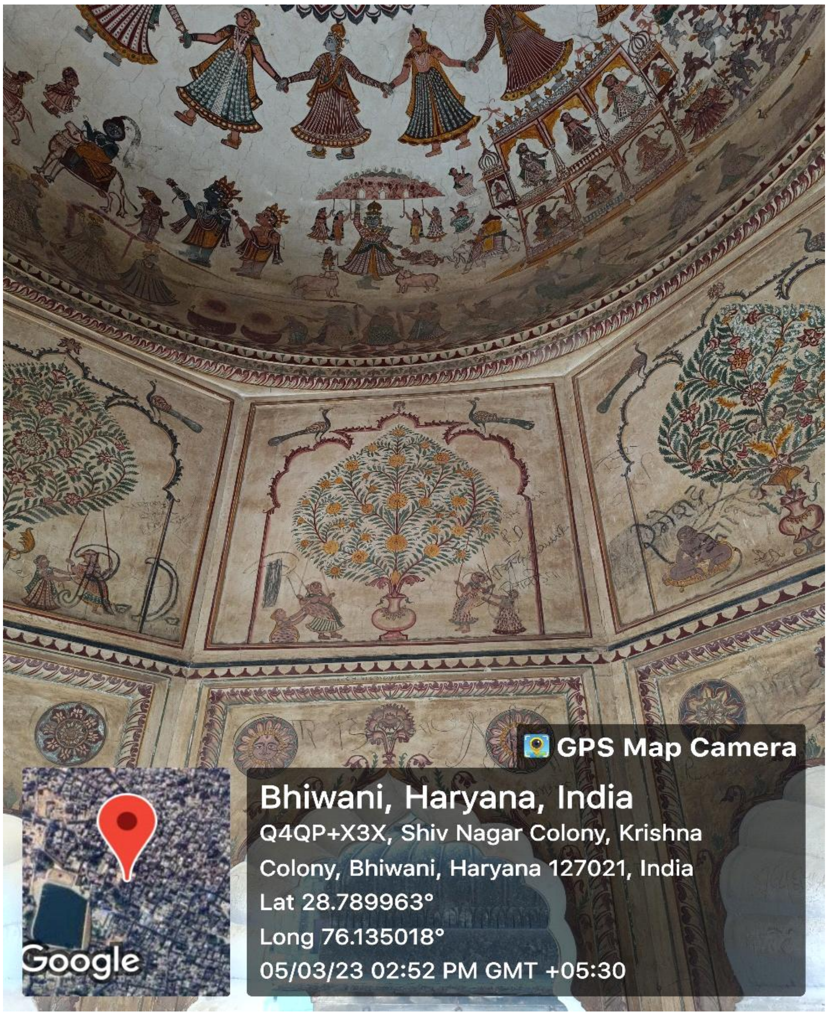

(छायाचित्र-2) हरियाली तीज, भित्ति चित्र, छतरी, भिवानी

छायाचित्र-2:- में पूर्व दिशा में सूर्य देव का अंकन धार्मिकता की गहराइयों का प्रक्षेपण है सर्वप्रथम सूर्य की किरणों का इस भित्ति पर स्पर्श करना न केवल संयोगात्मक है अपितु काल्पनिक व रचनात्मक दृष्टिकोण का भी परिचय है इसी के ऊपरी भाग में अंकित गेंदे के फूलों का अंकन प्राकृतिक का आभास देता हुआ भी शैलीगत रूप सौंदर्य का परिणाम है कल्पनात्मक तत्व की प्रधानता है कि किस प्रकार महिलाएं गेंदे के फूल पर झूला-झूल रही हैं| झूले व मयूर का अंकन हरियाणी संस्कृति में विशेष महत्ता रखने वाली हरियाली तीज के त्योहार की छटा बिखेरता विशिष्ट है| पौधे का अंकन मुगल शैली के वास्तुकला से प्रभावित है महलों में जालियों में पौधे समान रूप में उकेरे गए हैं|

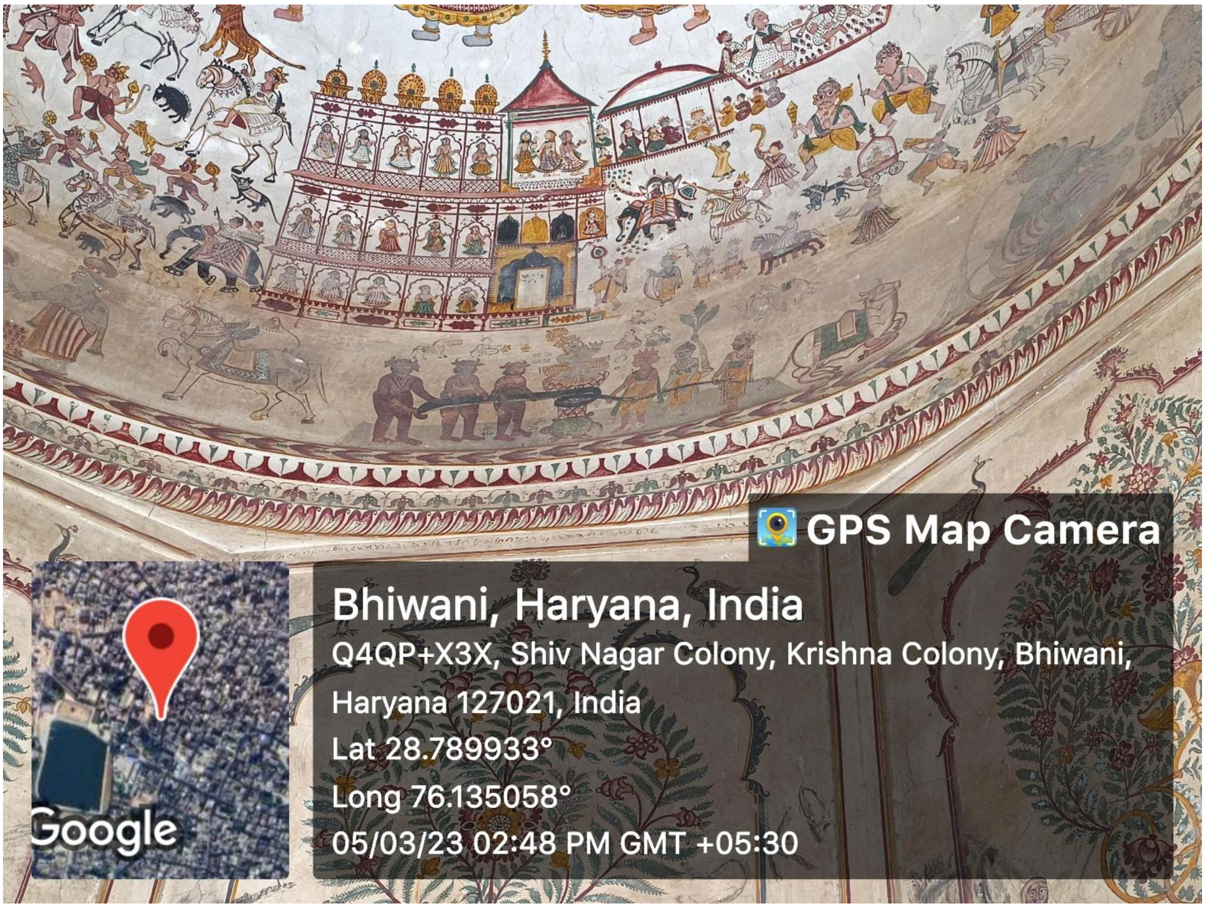

(छायाचित्र-3) समुद्र मंथन, भित्ति चित्र, छतरी, भिवानी

छायाचित्र-3:- चित्र के निचले पायदान में अंकित समुद्र मंथन का दृश्य बेहद सुंदर है एक और देवताओं का अंकन अतुल्य है वह दूसरी ओर राक्षसों का अंकन भयानक स्वरूप में भयानक रस की निष्पत्ति करता संपूर्ण घटनाजय वर्णन के कथानक स्वरूप को भाषित कर रहा है आकृतियों की रूपरेखा गहरे काले रंग में चित्रित है चित्र की परिधि को निर्धारित करता धरातलीय आभास समुद्र के समान नील है|

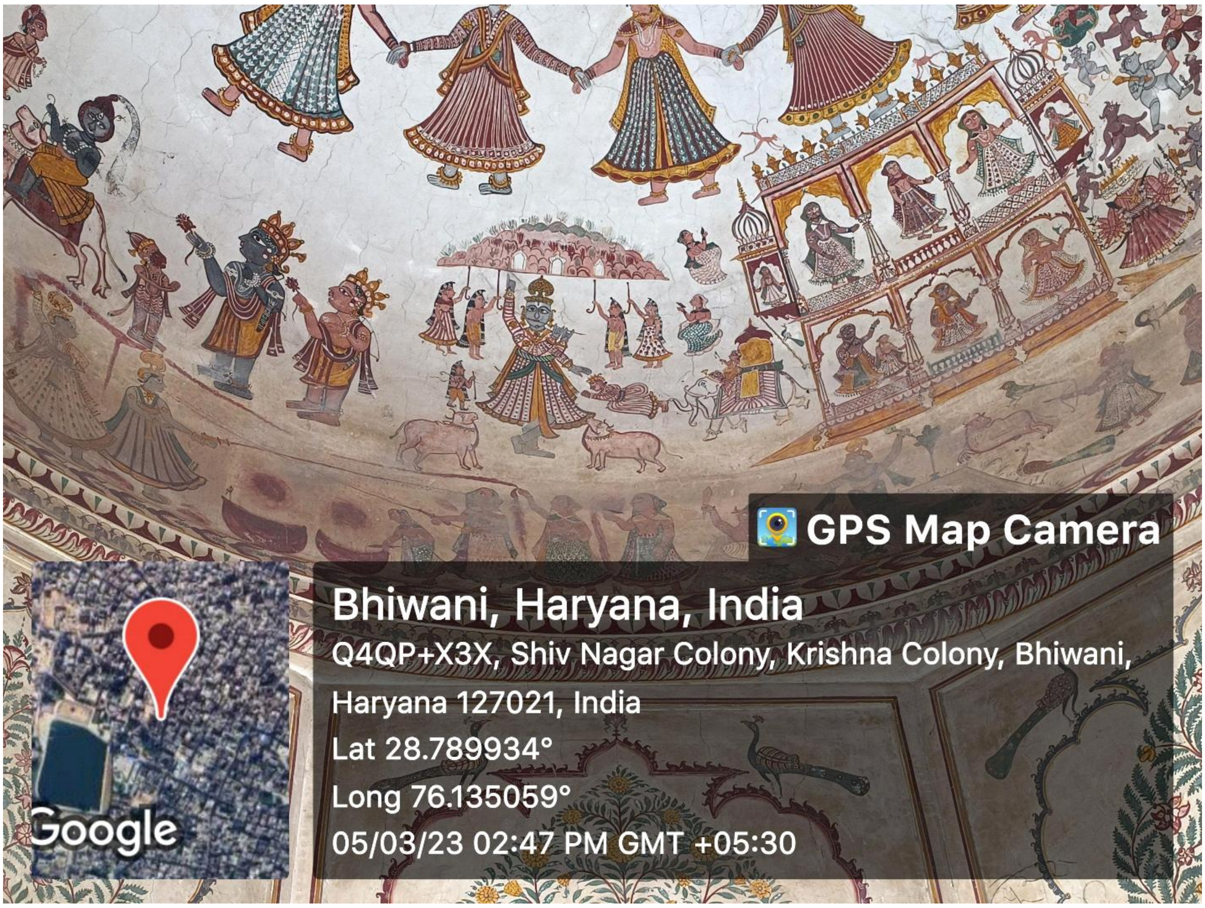

(छायाचित्र-4) गौवरधनधारी, भित्ति चित्र, छतरी, भिवानी

उपयुक्त छायाचित्र-4:- में गौवरधनधारी कृष्ण का अंकन है व संकेतात्मक रूप में समक्ष बनी आकृतियाँ मानो छाते के समान पर्वत उठाए हैं, कृष्ण को यहाँ दाएं हाथ से पर्वत उठाए दिखाया गया है साथ में गऊओं का चित्रण भी किया गया है चित्र में बाएं ओर इंद्र को श्री कृष्ण के समक्ष नतमस्तक दिखाया है व इंद्र का हाथी ऐरावत भी अंकित किया गया है छाते का आकार शैलीगत प्रधानता का श्रेष्ठ उदाहरण है जो वास्तव में छाते के आकार के समान है| पर्वत की शैली प्रायः राजस्थानी लघुचित्रण से प्रभावित है संकेतात्मकता का प्रयोग अतुल्य है|

प्रस्तुत छायाचित्र-5:- के मध्य में राजस्थानी प्रभाव परिलक्षित करते हुए मानो जैसे ऊंट पर की जाने वाली उस्ता कला का प्रयोगात्मक अभ्यास यहाँ घोड़ों पर द्रष्टव्य है| चित्र में भवन निर्माण में मुगलिया वास्तुकला का प्रभाव स्पष्ट है उसी आधार पर परिपेक्ष्य का अंकन है, चित्र में बाएं और शिव नंदी का अंकन किया गया है शिव की जटाओं से बहती गंगा वास्तव में सम्पूर्ण प्रतिमा लक्षण के प्रयोजन का घोतक है उसी के बाएं ओर धनुषधारी राम लक्ष्मण को दृशाया है व उनके समक्ष हनुमत को प्रणाम करते हुए चित्रित

किया गया है, राम लक्ष्मण के हाथों में कमल का अंकन बेहतरीन है| ठीक उसके नीचे होली के रंगों से सराबोर दृश्य में राधाकृष्ण को दृशाया है कुछ जगहों पर धार्मिक प्रतियों जैसे स्वास्तिक चिन्ह का बनाया गया है| हवा में उडते रंग दृश्य को परिभाषित करते अदभुत हैं (लोक महत्व) क्षेत्रीयता का आभास दृशाते पात्रों का अंकन श्रेष्ठ है|

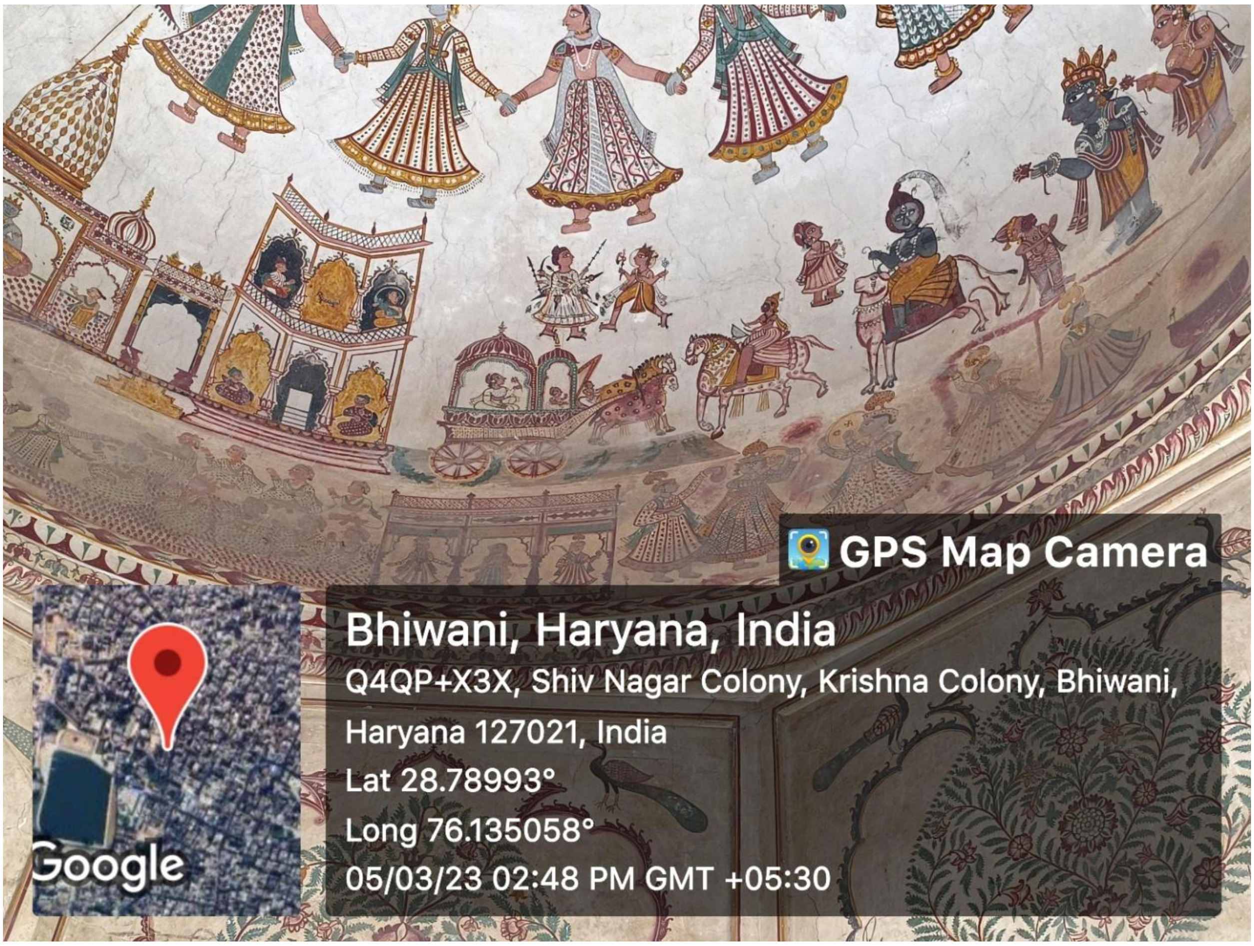

(छायाचित्र-5) भित्ति चित्र, छतरी, भिवानी

निष्कर्ष:-

भारत विभिन्नताओं में एकता / संलग्नता का देश है और इन्हीं विभिन्नताओं में प्रत्येक क्षेत्र विशेष में कलात्मक अवधारणाएं भी परिवर्तित / गतिशील/ भिन्न रही हैं| अपने क्षेत्र विशेष की सम्पूर्ण झलक सहेजे यह छतरियां आज भी जीवंत है आवश्यकता है तो केवल ऐसे कलात्मक/ सर्जनात्मक प्रयासों को सहेजने व अपनी आने वाली पीढ़ियों तक उसे संजोए रखने की, कला समय का यर्थाथ प्रतिबिंब है और ऐसे दुरलभ, अतुल्य, कलात्मक खजाने को लुप्त होने से पूर्व हमें अपनी इस मूल्यवान विरासत को संरक्षित करने के सफल प्रयास /कदम उठाने होगें| लगता है मानो भिवानी की ये छतरियां ऐसे हाथों की

तलाश में है जो इनके जीवंत संपदन के स्वरूप को संरक्षित कर सके और उन्हें सहेज सके| ऐसे प्रयास आने वाली पीढ़ियों तक अपनी संस्कृतिक धरोहर को स्थानांतरित करने में सफल हैं|

चित्र सूची

सभी छायाचित्र संबंधित स्थान विशेष का दौरा कर दिनांक:-5/3/2023 को खीचें गए हैं।

(छायाचित्र-1) रामायण, भित्ति चित्र, छतरी, गुम्बद का अंदरूनी (अण्ड भाग), 1870-1890, भिवानी, हरियाणा।

(छायाचित्र-2) हरियाली तीज, भित्ति चित्र, छतरी, भिवानी

(छायाचित्र-3) समुद्र मंथन, भित्ति चित्र, छतरी, भिवानी

(छायाचित्र-4) गौवरधनधारी, भित्ति चित्र, छतरी, भिवानी

(छायाचित्र-5) भित्ति चित्र, छतरी, भिवानी

सन्दर्भ सूची

1. Art and Visual Culture in India 1857-2007 By Gayatri Sinha (Marg Publication).
2. The Traditions of Northern India (A Study of Art, Architecture and Crafts in Haryana) 2008 By Bhup Singh Gulia.
3. Wall Paintings (The Vanishing Treasure), By Ram Partap Verma.
4. कला के सिद्धांत/ कलिंगवुड आर. जी., 123397
5. कला सौंदर्य के सिद्धांत/ माउरी मोहन, 185110
6. बृहद आधुनिक कला कोश/ भारद्वाज विनोद, 381523
7. भारतीय कला परिचय/ दास कुसुम, 107902
8. भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास// राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी// (25 वां संस्करण: 2016)